मधुबन ओम् शान्ति अंक 412 नवम्बर 2026

पत्र-पुष्प

निमित्त टीचर्स तथा सर्व ब्राह्मण कुल भूषण भाई-बहनों प्रति मधुर यादपत्र 21-10-26
अपने सर्व खजाने सफल कर ब्रह्मा बाप समान सम्पन्न और सम्पूर्ण बनो

प्राणप्यारे अव्यक्तमूर्त मात-पिता बापदादा के अति लाडले, सदा अपने सर्व खजानों को सफल कर सम्पूर्ण फरिश्ता बनने वाले, सदा बापदादा की आशाओं के दीपक, सफलता भव की वरदानी आत्मायें, निमित्त टीचर्स बहिनें तथा देश विदेश के सर्व ब्राह्मण कुल भूषण भाई बहिनें,

ईश्वरीय स्नेह सम्पन्न मधुर याद के साथ इनएडवांस दीपावली के पावन पर्व की सबको बहुत-बहुत दिल से हार्दिक बधाईयां।

दीपराज बाप ने तो हम सभी चैतन्य दीपकों में ज्ञान-योग का घृत डाल सदा जागती ज्योत बनाया है। हम सब जगे हुए दीपक अनेक दीपकों को प्रज्जवलित कर सच्ची-सच्ची दीपमाला मना रहे हैं। यादगार में तो एक दिन दीवाली मनाते, एक दो को बधाईयां देते, मुख मीठा कराते हैं। हम सबके लिए तो पूरा ही संगमयुग दीपराज के साथ मंगल मिलन मनाने का सदा दिलखुश मिठाई खाने खिलाने का पर्व है।

दीपावली का यह पावन पर्व सभी बड़े उमंग-उत्साह से मनाते हैं। भारत वर्ष में तो विशेष व्यापारी वर्ग पुराने चौपड़े बन्द कर नये चौपड़े रखते हैं। बाबा कहते आप बच्चे भी अभी कलियुग के पुराने चौपड़े अर्थात् सब पुराने हिसाब-किताब चुक्तू कर, नये संस्कारों का नया चौपड़ा शुरू करो। अपनी सच्ची सच्ची दीवाली तो भविष्य सतयुगी दुनिया में श्रीलक्ष्मी-श्रीनारायण के कारोनेशन पर होगी। सभी खूब खुशियां मनायेंगे, आतिशबाजी छोड़ेंगे, जिसकी यादगार अभी तक सभी मना रहे हैं।

तो ऐसे पावन पर्व की साथ-साथ नये वर्ष की और भैया दूज की आप सबको बहुत-बहुत दिल से हार्दिक बधाई हो। मधुबन में तो अभी बाबा के देश विदेश के अनेकानेक बच्चों के आने जाने की रिमझिम शुरू है। साथ-साथ हर एक का लक्ष्य है कि हमें अब बापदादा के इशारे प्रमाण स्वयं को ब्रह्मा बाप समान सम्पन्न और सम्पूर्ण बनाना है। जैसे ब्रह्मा बाप अनेक मैं और मेरेपन की हदों को पार कर कर्मातीत स्थिति के अनुभवी बनें। ऐसे हम सब भी कर्मबंधन मुक्त, कर्मातीत बनें, इसके लिए अभी हम सबको आवाज में आने और एक सेकेण्ड में आवाज से परे होने का अभ्यास करके, उपराम और साक्षीदृष्टा के संस्कारों को धारण कर कर्मेन्द्रिय जीत, कर्मातीत बनना है। जैसे ब्रह्मा बाबा के लिए सभी कहते है -''मेरा बाबा''। ऐसे हम सबसे भी हरेक को मेरे-पन की भासना आये। हरेक समझे कि यह मेरे शुभचिन्तक, सहयोगी सेवा के साथी हैं, इसको कहा जाता है - बाप समान। जब अभी से बाप की समानता का मेला मनायेंगे तब जय-जयकार होगी। तो अब बाप के गुण, बाप के कर्तव्य की स्पीड और बाप के अव्यक्त निराकारी स्थिति की स्टेज इन सभी में समानता का मेला मनाना है। कर्मों की गुह्य गति को जानकर, त्रिकालदर्शी बन न्यारे और प्यारे बन हर कर्म करना है। कर्मयोगी बनकर रहना है। तो बोलो, ऐसा ही लक्ष्य रख तीव्र पुरुषार्थ की रेस कर रहे हो ना!

अभी तो मधुबन बेहद घर में आप सबके आने की सीज़न है। भले पधारो, सभी का स्वागत है

अच्छा - सर्व को याद..

ईश्वरीय सेवा में,

बी के मोहिनी

मुख्य प्रशासिका, ब्रह्माकुमारीज़

ये अव्यक्त इशारे

ब्रह्मा बाप समान सम्पन्न और सम्पूर्ण स्थिति का अनुभव करो

1) आप सभी ब्राह्मण आत्माओं ने जन्म लेते ही यह व्रत लिया है कि हमें बाप समान सम्पन्न और सम्पूर्ण बनना है। जैसे सभी एवररेडी शब्द बोलते हो ऐसे सम्पन्न और सम्पूर्ण बनने में एवररेडी बनो, इसमें अलबेलापन न आये।

2) ब्रह्मा बाप ने सम्पूर्ण बनने के लिए अपने सर्व खजाने आदि से अन्तिम दिन तक सफल किये, इसका प्रत्यक्ष प्रमाण देखा - सम्पूर्ण फरिश्ता बन गये। तो लक्ष्य रखो मुझे बाप समान सम्पन्न और सम्पूर्ण बनना ही है। कुछ भी पुरुषार्थ करना पड़े लेकिन निश्चित है कि बाप समान बनना ही है।

3) बाप समान बनने के लिए ब्रह्मा बाप को फालो करते चलो। सोचो, ब्रह्मा बाप सम्पूर्ण कैसे बने? उनकी क्या विशेषता रही? सम्पूर्णता का विशेष आधार क्या रहा? ब्रह्मा बाप ने अपना हर समय सफल किया। श्वांस-श्वांस, सेकण्ड-सेकण्ड सफल किया। तो बाप समान बनने के लिए लक्ष्य रखो कि सफल करना है और सफलतामूर्त बनना है।

4) सम्पन्नता वा सम्पूर्णता को प्राप्त करने के लिए देह के अभिमान से सम्पूर्ण समर्पण होना है। देह का अभिमान बिल्कुल ही टूट जाए तब कहा जायेगा सर्व समर्पणमय जीवन, ऐसे जो सर्व त्यागी, सर्व समर्पण जीवन वाले हैं उनकी ही सम्पूर्ण अवस्था गाई जाती है और जब सम्पूर्ण बन जायेंगे तब साथ जायेंगे।

5) जैसे हैं, जो भी परिस्थितियां सामने हैं, उन्हीं हालतों में रहते इस ही शरीर में हमको सम्पूर्ण बनना है, यह लक्ष्य रखो। आपका संगमयुगी सम्पूर्ण रूप शक्तियों और पाण्डवों के रूप में गाया हुआ है। जब इस स्वरूप में स्थित होंगे तब मालूम पड़ेगा कि हमारे भक्त कौन से हैं और प्रजा कौनसी है। जो प्रजा होगी वह नज़दीक आयेंगे और जो भक्त होंगे वह पिछाड़ी में चरणों पर झुकेंगे।

6) अन्तिम सम्पूर्ण स्थिति को प्राप्त करने के लिए स्वयं को मेहमान समझकर चलो। जो अपने को मेहमान समझते हैं वह व्यक्त में होते हुए भी अव्यक्त स्थिति में रहते हैं, उनका किसके साथ भी लगाव नहीं होता है। हम इस शरीर में, इस पुरानी दुनिया में मेहमान हैं, सिर्फ थोड़े समय के लिए यह शरीर काम में लाना है।

7) पाण्डवों का गायन है कि गल कर खत्म हो गये। पहाड़ों पर नहीं लेकिन ऊंची स्थिति में गल कर अपने को निचाई से बिल्कुल ऊपर जो अव्यक्त स्थिति है, उसमें गल गये अर्थात् उस अव्यक्त स्थिति में सम्पूर्णता को प्राप्त हुए, यह आप पाण्डवों का ही यादगार है।

8) "बिन्दु और सिन्धु" यह दो शब्द भी अगर याद रखो तो सम्पूर्णता सहज आ सकती है। एक बिन्दु की याद और एकरस अवस्था, एक की ही मत और एक के ही कर्तव्य में मददगार। सिर्फ बिन्दु और एक, उसके आगे विस्तार में जाने की दरकार नहीं। विस्तार में जाना है तो सिर्फ सर्विस प्रति। उसके आगे अपनी बुद्धि को चलाने की आवश्यकता नहीं है।

9) स्नेह और शक्ति जब इन दोनों का मिलन हो जाता है तो अवस्था अति न्यारी और अति प्यारी होती है, जिसके लिए स्नेह है उसके समान बनना है, यही स्नेह का सबूत है। लेकिन सिर्फ स्नेह रखने से सम्पूर्ण नहीं बनेंगे, स्नेह के साथ-साथ शक्ति भी होगी तो खुद सम्पूर्ण बन औरों को भी सम्पूर्ण बनायेंगे।

10) संगमयुग की सम्पूर्ण स्टेज का पिक्चर है फरिश्ता। फरिश्ता बिल्कुल हल्का होता है और जिसमें हल्कापन है वह हर परिस्थिति में अपनी श्रेष्ठ स्थिति बना लेता है। फरिश्ते संकल्पों में भी हल्के, वाणी में भी हल्के और कर्म करने में भी हल्के और सम्बन्ध में भी हल्के रहेंगे और जो हल्के होंगे वो एक सेकेण्ड में कोई भी आत्मा के संस्कारों को परख सकेंगे। जब यह सभी गुण हर कर्म में प्रत्यक्ष दिखाई दें तब समझो अब सम्पूर्ण स्टेज नजदीक है।

11) जितना सम्पूर्ण स्टेज समीप आती जायेगी उतना दूसरों के संकल्पों को रीड कर सकेंगे, इसके लिए अपने संकल्पों के ऊपर फुल ब्रेक चाहिए। जो अपने संकल्पों को समेट सकते हैं वही दूसरों के संकल्पों को समझ सकते हैं। तो संकल्पों का बिस्तर बन्द करते चलो।

12) सम्पूर्णता नम्बरवार होगी। माला के 108 मणके हैं, उसमें नम्बरवन मणका और एक सौ आठवाँ मणका दोनों को सम्पूर्ण वा विजयी रत्न तो कहेंगे। विजयी रत्न अर्थात् अपने नम्बर प्रमाण सम्पूर्णता को प्राप्त हुए, उनके लिए सारे ड्रामा के अन्दर वही सम्पूर्णता की फर्स्ट स्टेज है।

13) जब स्थूल और सूक्ष्म दोनों का अन्तर समाप्त हो जायेगा तब सम्पूर्ण स्थिति के समीप आयेंगे। यह व्यक्त देश अव्यक्त देश बन जायेगा। जैसे बापदादा व्यक्त में आते हैं तो भी अव्यक्त रूप के अव्यक्त देश की अव्यक्ति प्रवाह में रहते हैं। वही बच्चों को अनुभव कराते हैं तो आप भी अपने अव्यक्त स्थिति का अनुभव औरों को कराओ।

14) इस समय को अमूल्य समझकर प्रयोग करो तब सम्पूर्ण बन सकेंगे। सम्पूर्ण होने में व्यर्थ संकल्प जो रुकावट डालते हैं इससे बचने के लिए कभी अन्दर वा बाहर की रेस्ट न लो। रेस्ट में नहीं होंगे तो वेस्ट नहीं जायेगा। दूसरा अपने को सदैव गेस्ट समझो।

15) व्यर्थ संकल्प वा विकल्प जो चलते हैं उसका कारण एक ही शब्द बुद्धि में आता है कि यह क्यों हुआ, क्यों से व्यर्थ संकल्पों की क्यू शुरू हो जाती है। इस क्यू के समाप्ति के बाद ही सम्पूर्णता आयेगी फिर वह क्यू लगेगी। जब क्यों शब्द खत्म होगा तब ड्रामा की भावी पर एकरस स्थेरियम रहेंगे।

16) एक दो की बातों को स्वीकार करना और सत्कार देना, जब यह दोनों ही बातें आ जाती हैं तो फिर सम्पूर्णता और सफलता दोनों ही समीप आ जाती है क्योंकि एक दो को सत्कार देना ही भविष्य का अधिकार लेना है।

17) आप सम्पूर्ण आत्माओं का अन्तिम वाहन है - कर्मबन्धन मुक्त, कर्मातीत स्थिति। ऐसी स्थिति बनाने के लिए ब्रह्मा बाप समान सर्व हदों पर विजय प्राप्त करने वाले विजयी रत्न बनो। तब अन्तिम कर्मातीत स्वरूप के अनुभवी बनेंगे। अनेक प्रकार की हदें अर्थात् अनेक मेरा मेरा। जब मैं और मेरा, तू और तेरा .. यह चार शब्द एक बाबा शब्द में समा जायेंगे तब सम्पूर्णता समीप आयेगी।

18) एक सेकेण्ड में आवाज में आओ और एक सेकेण्ड में आवाज से परे हो जाओ, अभी-अभी आवाज में, अभी-अभी आवाज़ से परे.. जब यह अभ्यास सरल और सहज हो जायेगा तब समझो सम्पूर्णता समीप है। अभी आपकी हर कर्मेन्द्रिय ''जी हजूर'' ''जी हाज़िर'' करती हुई चले। ऐसे जब आप राज्य अधिकारियों का यह कर्मन्द्रियां स्वागत अर्थात् सलाम करेंगी तब सम्पन्न व सम्पूर्ण कर्मातीत बन सकेंगे।

19) पुरुषार्थ में सरलता, ब्रह्मा बाप समान उपराम और साक्षीदृष्टा के संस्कार, यही सम्पूर्ण स्टेज की निशानी व लक्षण हैं। तो अब इन संस्कारों में समानता लानी है। इससे ही सर्व के दिलों पर विजयी होंगे, जो संगम पर सर्व के दिलों पर विजयी बनता है वही भविष्य में विश्व महाराजन् बनता है।

20) संकल्प किया और जिस स्थिति में स्थित होना चाहें उसमें स्थित हो जायें, यही है बाप समान सम्पूर्ण अवस्था वा कर्मातीत अन्तिम स्टेज। जितना सम्पूर्ण अवस्था के नज़दीक होंगे अर्थात् बाप के नजदीक होंगे, उसी अनुसार भविष्य प्रालब्ध में भी राज अधिकारी होंगे। जितना नशा होगा उतना अपना कर्मातीत अवस्था का निशाना नजदीक दिखाई देगा।

21) किसी भी प्रकार का देह का, सम्बन्ध का, वैभवों का बन्धन अपनी ओर आकर्षित न करे, ऐसी स्वतन्त्र आत्मा ही बाप-समान कर्मातीत स्थिति वा सम्पन्न स्थिति का अनुभव करती है। इसके लिए प्रैक्टिस करो अभी-अभी कर्मयोगी, अभी-अभी कर्मातीत स्टेज। कोई भी कर्म अपने बंधन में बांध न ले।

22) जैसे आपकी रचना कछुआ सेकेण्ड में सब अंग समेट लेता है। समेटने की शक्ति रचना में भी है। आप मास्टर रचता समेटने की शक्ति के आधार से सेकेण्ड में सर्व संकल्पों को समाकर एक संकल्प में सेकेण्ड में स्थित हो जाओ। जब सर्व कर्मेन्द्रियों के कर्म की स्मृति से परे एक ही आत्मिक स्वरूप में स्थित हो जायेंगे तब कर्मातीत अर्थात् सम्पन्न स्थिति का अनुभव होगा।

23) जैसे ब्रह्मा बाप के लिए सबके मुख से एक ही आवाज निकलती है -''मेरा बाबा''। ऐसे आप हर श्रेष्ठ आत्मा के प्रति यह भावना हो, महसूसता हो। हरेक से मेरेपन की भासना आये। हरेक समझे कि यह मेरे शुभचिन्तक, सहयोगी सेवा के साथी हैं, इसको कहा जाता है - बाप समान। यही है सम्पन्न वा सम्पूर्ण कर्मातीत स्टेज।

24) अब सेवा के, कर्म के भी बन्धन में नहीं आओ। हमारा स्थान, हमारी सेवा, हमारे स्टूडेन्ट, हमारी सहयोगी आत्मायें, यह भी सेवा के कर्म का बन्धन है, इस कर्मबन्धन से न्यारे अर्थात् कर्मातीत। जैसे ब्रह्मा बाप ने सदा न्यारे और प्यारेपन का बैलेन्स रखा। सबको अपनेपन की अनुभति कराते भी हर एक का सम्बन्ध उस एक से (निराकार बाप से) जुटाया, ऐसे आप बच्चे भी सबको अपनेपन की महसूसता दिलाए आत्माओं को समीप ठिकाने पर पहुंचाने वाले बनो, तब कहेंगे बाप समान।

25) जैसे ब्रह्मा बाप सदा आवाज से परे अपनी श्रेष्ठ स्थिति में स्थित रहने का अभ्यास करते रहे। इससे वे सर्व व्यक्त आकर्षणों से परे शक्तिशाली न्यारी और प्यारी स्थिति में रहे। ऐसे आप बच्चे भी उस श्रेष्ठ स्थिति में स्थित रहने का अभ्यास करते रहो, तो कर्म करते भी विशेष शान्ति की शक्ति का अनुभव करते रहेंगे, इसी अभ्यास से बाप समान सम्पन्न व सम्पूर्ण बन जायेंगे।

26) ब्राह्मण जीवन का लक्ष्य है ब्रह्मा बाप समान सम्पन्न वा कर्मातीत बनना। इस लक्ष्य को पाने के लिए विशेष स्वयं में समेटने

की शक्ति, समाने की शक्ति धारण करो। कर्मबन्धनी आत्माएं जहाँ हैं वहाँ ही कार्य कर सकती हैं और कर्मातीत आत्मायें एक ही समय पर चारों ओर सेवा का पार्ट बजा सकती हैं क्योंकि कर्मातीत हैं। उनकी स्पीड बहुत तीव्र होती है, सेकण्ड में जहाँ चाहे वहाँ पहुँच सकती हैं।

27) हर ब्राहमण बाप-समान चैतन्य चित्र बनो, लाइट और माइट हाउस की झाँकी बनो। संकल्प शक्ति का, साइलेन्स का भाषण तैयार करो और कर्मातीत स्टेज पर वरदानी मूर्त का पार्ट बजाओ तब सम्पूर्णता समीप आयेगी। फिर सेकेण्ड से भी जल्दी जहाँ कर्तव्य कराना होगा वहाँ वायरलेस द्वारा डायरेक्शन दे सकेंगे। सेकेण्ड में कर्मातीत स्टेज के आधार से संकल्प किया और जहाँ चाहें वहाँ वह संकल्प पहुंच जाए।

28) जैसे साकार में देखा लास्ट सम्पन्न व कर्मातीत स्टेज का पार्ट सिर्फ ब्लैसिंग देने का रहा, बैलेन्स की भी विशेषता और ब्लैसिंग की भी कमाल रही। ऐसे फालो फादर। सहज और शक्तिशाली सेवा यही है। अब विशेष आत्माओं का पार्ट है ब्लैसिंग देने का। चाहे नयनों से दो, चाहे मस्तकमणी द्वारा। कर्म करते भी कर्म के बन्धनों से सदा अतीत अर्थात् न्यारे रहो। कभी कर्मों के वशीभूत नहीं, कर्मेन्द्रियों द्वारा हर कर्म करते हुए अधिकारीपन के नशे में रहो, यही सम्पूर्णता की स्टेज है।

29) जैसे ब्रह्मा बाप सदा अशरीरी स्थिति में रह, शरीर का आधार लेकर कर्म किया फिर न्यारे हो गये। इसी प्रैक्टिस से वे कर्मातीत बने। आप बच्चे भी कर्म करते भी ऐसा अनुभव करो जैसे कोई वस्त्र धारण कर कार्य रहे हैं। कार्य पूरा हुआ और वस्त्र से न्यारे हुए। शरीर और आत्मा दोनों का न्यारापन चलते-फिरते भी अनुभव हो।

30) अभी ब्रह्मा बाप के संस्कार, बाप के गुण, बाप के कर्तव्य की स्पीड और बाप के अव्यक्त निराकारी स्थिति की स्टेज सभी में समानता का मेला मनाओ। जब आप बाप की समानता का मेला मनायेंगे तब जय-जयकार होगी, विनाश के समीप आयेंगे। तो अब कर्मों की गुह्य गति को जानकर, त्रिकालदर्शी बन न्यारे प्यारे बन हर कर्म करो तब कर्मातीत बन सकेंगे।

(त्रिमूर्ति दादियों द्वारा मिली हुई अनमोल शिक्षायें)

शिवबाबा याद है ? *ओम् शान्ति* 21-10-2026 *मधुबन*

मन्सा सेवा करने के लिए एकाग्रता के अभ्यास द्वारा सर्व शक्तियों का स्टॉक जमा करो

(गुल्जार दादी 02-02-02)

मधुबन में सभी आते ही हैं अपने को ज्ञान रत्नों से भरपूर करने और शक्तियों द्वारा शक्ति स्वरूप बनने क्योंकि हम सबको बाबा ने विश्व-कल्याणकारी बनाया है। तो विश्व का कल्याण करना है और विश्व में जो भी आत्मायें हैं उन्हों को अभी चाहिए क्या? उन्हों की आवश्यकता क्या है? किसी से भी पूछो तो हर मनुष्य आत्मा की चाहना यही है कि हमें शक्ति मिले, खुशी मिले, शान्ति और सुख मिले। तो हम विश्व-कल्याणकारी आत्मायें, जिन्हें बाबा ने निमित्त बनाया है, उन्हों को सभी की जो आवश्यकयता है उसे पूर्ण करना है। तो सबकी जो चाहनायें, आवश्यकतायें हैं, उसको पूर्ण करने के लिये पहले अपने आपसे पूछें कि दुनिया को जो चाहिए, क्या वो सब प्राप्तियां बाबा द्वारा हमें हुई हैं? हमारे पास शान्ति, सुख, शक्तियों, गुणों का इतना स्टॉक है जो हम किसको दे सकें क्योंकि दे वही सकता है जिसके पास स्टॉक इकट्ठा होगा। तो अपने आपको चेक करें, कि सर्वशक्तिवान बाबा के समान मास्टर सर्वशक्तिवान बने हैं? अगर नहीं हैं, जिस भी शक्ति की थोड़ी भी कमी हो तो यहाँ से भरकर जाना। नहीं तो माया को पता पड़ जाता है कि यह शक्ति इसके पास कम है फिर वहाँ से ही चमाट लगाती है। जैसे वह मल्लयुद्ध करते हैं, तो उन्हों को पता पड़ जाता है कि इसकी यहाँ कमजोरी है तो वहाँ से ही उसको हार दिला देते हैं। तो माया को भी पता पड़ जाता है कि इसमें सहनशक्ति की कमी है। भले समाने, सामना करने वा निर्णय करने की शक्ति हो लेकिन सहन शक्ति कम हो। तो माया वही रूप धारण करके आपके पास आयेगी। और जिन आत्माओं को सहनशक्ति चाहिए उनको आप अगर निर्णय शक्ति भी दे दो तो वो खुश होंगे क्या? अभी किसको पानी की प्यास है और आप उसको 36 प्रकार के भोजन दे दो तो क्या वह व्यंजन अच्छे

लगेंगे! वह कहेगा पहले एक बूँद पानी तो दे दो फिर मैं देखूँगा। तो जिसको सहनशक्ति चाहिए उसको और कोई शक्ति आप देंगे भी तो भी वह कहेगा कि मेरी तृप्ति नहीं हुई। जो मुझे प्राप्ति चाहिए वह आपने नहीं दी, इसलिए बाबा हमको टाइटल देता है मास्टर सर्वशक्तिवान। सर्व शब्द है शक्तिवान नहीं है। सर्वशक्तिवान का अर्थ ही है सर्व शक्तियाँ हों।

तो मन्सा सेवा बहुत बड़ी सेवा है और बड़ी सूक्ष्म सेवा है। पहले हमारे मन में सब शक्तियाँ हों! हमारे मन में अगर कोई भी शक्ति कम है तो हम दूसरों की मन्सा सेवा क्या कर सकेंगे और मन्सा सेवा तब हो सकती है - जब पहले हमारे मन में एकाग्रता हो। हम जब चाहे जैसे चाहे जितना समय चाहें उतना मन को जहाँ टिकाना चाहे, वहाँ टिका लें। ऐसे नहीं कि हम कहें हे मन अव्यक्त फरिश्ते रूप में स्थित हो जाओ और वह कहाँ कहाँ भागदौड कर रहा हो, यदि हमारा मन ही हमारे कन्ट्रोल में नही होगा तो मन से सेवा कैसे कर सकते हैं। तो चेक करो पहले एकाग्रता की शक्ति हमारे मन में है? जो बाबा कहता है कि मन्सा सेवा के लिए एक तो स्टॉक चाहिए सर्व शक्तियों का और दूसरा स्टॉप करने की शक्ति चाहिए। अगर हम मन को ऑर्डर करते हैं क्योंकि मन मेरा है, मैं मन की मालिक हूँ तो मालिक जैसे सेवाधारी को ऑर्डर करता है, लेकिन अगर वह नहीं माने तो वह सेवाधारी क्या हुआ! अगर मन को मैं ऑर्डर करती हूँ बस इस समय तुमको फरिश्ते रूप में स्थित होना है और फरिश्ते के बजाए संसार की बातों में वह घूमने चला जाए तो क्या होगा, मन्सा सेवा हम कर सकेंगे? तो हमारे मन में पहले कन्ट्रोलिंग पॉवर है, हम मेरा मन कहते हैं लेकिन मेरे को मेरा बनाया है या मेरे के फेरे में ही रहते हैं? कभी कहाँ, कभी कहाँ फेरा लगाते, फेरे में हैं। अगर मेरा मन है तो एक सेकण्ड में बाबा कहते हैं बिन्दी लगाओ। तो क्या हम एक सेकण्ड में बिन्दी लगा सकते हैं कि लगाते हैं बिन्दी और बन जाता है क्वेश्चन मार्क? कई भाई बहनें ऐसे कहते हैं, हम सोचते हैं बस, बिन्दी लगा दें लेकिन फिर भी क्यों, क्या, कैसे, कौन... यह कै कै आ जाती है। तो जब मेरे मन के ऊपर मेरा कन्ट्रोल नहीं है, मैं मन की मालिक पूरी नहीं बनी हूँ, अपने मन को वश करने की मैं खुद ही सेवा नहीं कर सकती हूँ, तो मन्सा सेवा दूसरों की कैसे करेंगे? तो मन्सा सेवा के लिये पहले अपनी स्टेज तैयार करनी पड़े कि कन्ट्रोलिंग पॉवर कहाँ तक है? अगर आपके गाड़ी की ब्रेक ठीक नहीं होगी तो मानो मैं यहाँ ब्रेक लगाने चाहती हूँ और यहाँ के बजाए यहाँ ब्रेक लगे, तो इतने देरी में तो एक्सीडेन्ट हो ही जायेगा। तो जो हम चाहते हैं वह तो नहीं होगा ना। स्टॉप कहा तो स्टॉप हो जाना चाहिए तब हम मन्सा सेवा कर सकते हैं।

और दूसरी बात है कि एक तो अपने मन की कन्ट्रोलिंग पॉवर चाहिए और दूसरा हमें मन में सर्व शक्तियों का स्टॉक चाहिए और तीसरा जब हम सम्बन्ध-सम्पर्क में आते हैं तो वैसे तो अपनी रीति से रहते हैं, ठीक हैं लेकिन हम लोगों का परिवार है, हमारा संन्यास मार्ग नहीं है, हमारा यह परिवार कितना बड़ा है। दुनिया वालों को हमारे घर-बार, धन्धा-धोरी छोड़ने का ही डर लगता है लेकिन हम कहते हैं हमारे इतने घर हैं जो हमको अपने साथ कहाँ भी जाते हैं तो एड्रेस की कॉपी रखनी पड़ती है। कितने घर हैं, पता है आपको। लाखों के अंदाज में हैं, जो भी बाबा के घर सो हमारे घर हैं इसलिए हम फलक से कहते हैं, लाखों की अन्दाज में हमारे घर हैं। सारे विश्व में है कोई ऐसा, जिसका लाखों की अन्दाज में परिवार हो? कोई तो ढूँढके दिखाओ, इतना हमारा बड़ा परिवार है। तो हमने परिवार छोड़ा या परिवार मिला? फारेन में भी हमारे बाबा का घर सो हमारा घर है। तो हमारा परिवार होने के कारण हमको सम्बन्ध-सम्पर्क में, सेवा के सम्बन्ध में भी आना पड़ता है और मन्सा सेवा के लिए हमारे पहले मन में हर आत्मा के प्रति शुभ भावना शुभ कामना जरुर होनी चाहिए। इमर्ज रूप में, मर्ज में नहीं। एक होता है शुभ भावना रखनी है, नहीं। प्रैक्टिकल रूप में इमर्ज रूप में दिखाई दे। जब कोई अशुभ भावना वाला हमारे सामने आता है तो मैंने ट्रायल किया, उसके प्रति भी हमारी शुभ भावना है! शुभ के साथ शुभ रहना यह तो कॉमन बात है, वह तो स्वत: ही वैसे रहेंगे लेकिन कोई अशुभ भावना वाला आपके सामने आवे और आप उसके प्रति शुभ भावना रखें तब कहेंगे शुभ भावना की मन्सा है। तो वह चेकिंग चाहिए और शुभ भावना तब आ सकती है जब आपको उसके आत्मिक स्वरूप के तरफ ही दृष्टि जावे। अगर आप देह भान से उसको देखेंगे तो कभी शुभ भावना नहीं आ सकती है। उसकी कमियां आपके लिस्ट में आ जायेंगी, वह कमियां भी बड़े रूप में दिखाई देंगी। तो मन्सा सेवा के लिये पहले हम अपने आपको चेक करें कि हमारी शुभ भावना और शुभ कामना है?

अच्छा, कोई ने हमारी इनसल्ट कर दी, गाली दे दी या जो मैं नहीं चाहती हूँ वह मेरा पूरा नहीं किया, यह संगठन में तो हो ही जाता है। और उसके प्रति मेरे को बाबा कहता है शुभ भावना रखो। शुभ भावना आयेगी? लेकिन शुभ भावना तब आ सकती है जब आपको यह स्मृति हो कि इस समय यह आत्मा किसी भी कमजोरी के परवश है। मानो आप पर कोई क्रोध कर रहा है, आप कहेंगे समझता क्या है अपने आपको, इतना क्रोध क्यों करता है! मैं भी तो ब्रह्माकुमार हूँ, यह फिर क्या बड़ा ब्रह्माकुमार है क्या! यह क्यों क्रोध करता है लेकिन वह बिचारा तो परवश है,

क्रोध के वश है और आप उस फीलिंग में आ गये तो आप भी फेल हो गये ना! उसको क्रोध आया आपको फीलिंग आ गयी या उसको क्रोध आया आपको अभिमान आया, यह क्या समझते हैं, कौन हैं यह? इस प्रकार आपमें अभिमान आ गया। तो कोई मुरली ऐसी आयी है जिसमें क्रोध खराब है लेकिन फीलिंग भले करो उसकी छुट्टी है, ऐसी कोई मुरली है? तो फीलिंग भी तो खराब बात है ना। और फीलिंग तो सचमुच ऐसी चीज़ है, जैसे कि फ्लू की बीमारी। उसमें क्या होता है कि सारा बदन टूटता है, मुख कडुआ हो जाता है, कुछ अच्छा नहीं लगता है, न सोना अच्छा लगेगा, न बैठना अच्छा लगेगा। ऐसे ही जब कोई भी बात की फीलिंग आती है तो उस समय मन को चैन नहीं होता है। मन चक्कर लगाता रहता है। इसलिए अगर मेरे मन में पहले शुभ भावना, शुभ कामना है ही नहीं तो मैं मन्सा सेवा कैसे कर सकूँगी। क्यों? सभी तो एक जैसे हमको मिलने ही नहीं हैं। हम झाड़ दिखाते हैं झाड़ में सिर्फ तना हो तो क्या आपको बढ़िया लगेगा? जिस झाड़ में विस्तार बहुत होगा, पत्ते बहुत होंगे, फूल होंगे और शाखायें होंगे, वह झाड़ अच्छा लगेगा या सिर्फ एक ही सीधा तना वाला अच्छा लगेगा? तो यह भी वैराइटी वृक्ष है, चाहे ब्राह्मणों के संसार में, चाहे लौकिक परिवार में, चाहे विश्व की आत्माओं में भी... कई भाई बहनें ज्ञान में आने के बाद ऐसे सोचते हैं कि दैवी परिवार में भी ऐसे होता है क्या? देखने में आ रहा है फिर भी कहते हैं ऐसा होता है क्या? हमने तो समझा ही नहीं ऐसा भी होता है। अरे समझा या नहीं समझा लेकिन प्रैक्टिकल तो देख रहे हो ना। बाबा हमेशा कहता है कि यहाँ सिर्फ धर्म स्थापन नहीं हो रहा है। धर्म के साथ राज्य भी स्थापन हो रहा है। तो राजधानी में सब प्रकार के चाहिए ना! तो जरुर उनकी अवस्था में कोई अन्तर होगा, कोई दासी बनेगा, कोई राजा बनेगा। अगर सभी राजा बनें तो पानी का ग्लास कौन देगा! नम्बरवार तो होंगे ही, राजधानी स्थापन हो रही है इसमें यह क्वेश्चन नहीं उठ सकता है कि यहाँ भी ऐसे होता है क्या! क्या बोला, क्वेश्चन आया और गये। हमको बाबा ने त्रिकालदर्शी बना दिया है, आप त्रिकालदर्शी स्टेज पर स्थित हो जाओ, आपका कोई क्वेश्चन नहीं उठेगा। सब उत्तर मिल जायेगा। क्वेश्चन मार्क देखो कितना टेड़ा-बांका होता है और बिन्दी कितनी सहज होती है। तो बिन्दी लगाना सहज है या क्वेश्चन मार्क लगाना सहज है? (बिन्दी) लेकिन क्वेश्चन ज्यादा लगाते हैं। ऐसे क्यों किया, क्यों कहा यह क्यों क्या की क्यू लग जाती है। बाबा ने तो बता दिया है कि यह क्यों शब्द जो है उसके पीछे व्यर्थ संकल्पों की क्यू लगती है। व्यर्थ संकल्पों का दरवाजा यही है। कभी भी आपके पास कोई भी व्यर्थ संकल्प की लाइन लगी हो तो उसे चेक करो, जो बीत चुका है उसको भी याद करके देखो, चेक करो पहला क्वेश्चन क्यों होगा। तो यह मन्सा सेवा तो बहुत बड़ी बात है, पहले अपनी मन्सा को ठीक करो। हमारे मन में शुभ भावना शुभ कामना है, हम दूसरों को दोष ज्यादा देते हैं और दूसरों की कमी बहुत जल्दी देखने में आती है। बाबा ने हंसी में सुनाया था कि ब्राह्मणों की नज़दीक की आंख कमजोर है लेकिन दूर की आँख बड़ी तेज है। दूसरे की कमी को देखने के लिये दूर की आँख है। अपनी कमी को देखने के लिये नज़दीक की ऑख है, वह कमजोर है।

अपना जज भले बनो लेकिन दूसरे का जज बाबा ने बनाया ही नहीं है। जब हम अपना दोष नहीं देखते हैं दूसरों का देखते हैं तो वही विघ्न रूप बनता है। मैं नहीं दु:ख देता हूँ, वह मेरे को दु:ख देता है। लेकिन दु:ख देने और लेने वाला एक होता है या देने वाला एक होता है, लेने वाला दूसरा होता है। उसने आपको दु:ख दिया, लेने वाला कौन? तो लेने वाले हम हैं तो लेते क्यों हैं? जब आपको अच्छी बात नहीं लगती, आप कहते हो कि देखो यह दु:ख देता है, तो दु:ख अच्छा नहीं है तब तो आप कहते हो दु:ख देता है। दु:ख देना नहीं चाहिए तो आपने लिया क्यों? अगर बुरी चीज़ है तो आप लो नहीं। ले लेते हो माना अन्दर धारण कर लेते हो, उसकी बातें फील कर लेते हो और फिर कहते हो मैं तो ठीक हूँ, यह बहुत दु:ख देता है। अरे! सब हिसाब-किताब हमारे यहाँ ही चुक्तू होने हैं! 63 जन्मों में कितनों से आपने हिसाब-किताब बनाया होगा तो वही ब्राह्मण बनकर आपके सेवाकेन्द्र, पेपर हॉल में आये हुए हैं। जहाँ आप सेन्टर पर जाते हो, वही आपका पेपर हॉल है। उसी सेन्टर के ही आपके हिसाब-किताब चुक्तू करने वाले होंगे। तो हिसाब खुशी-खुशी से चुक्तू करो, बनाया है तो चुक्तू भी करो। धर्मराजपुरी से बचना है तो यहाँ ही चुक्तू कर लो। अगर धर्मराजपुरी में जाना है फिर तो भले जो भी करो, वहाँ सज़ा खाके चुक्तू करना लेकिन हमको धर्मराजपुरी में नहीं जाना है तो यहाँ ही चुक्तू करो। चाहे शरीर द्वारा, चाहे मन द्वारा, चाहे सम्बन्ध द्वारा, सबके द्वारा हमारे जो रहे हुए हिसाब-किताब हैं, वह चुक्तू होने ही हैं। इसीलिए खुशी-खुशी से समझदार, त्रिकालदर्शी बनके, साक्षी दृष्टा हो करके पार्ट बजाओ। जो साक्षी दृष्टा होकर पार्ट बजाता है, चाहे खराब हिसाब है, चाहे अच्छा हिसाब है। खराब को भी हम समझ से चुक्तू करें, शुभ भावना शुभ कामना रखना माना समझ से अपना हिसाब चुक्तू किया। अगर समझ से नहीं करते हैं तो हिसाब चुक्तू करते-करते और भी बनता जाता है, जमा होता है, बोझ चढ़ता जाता है। इसीलिए बाबा कहते हैं त्रिकालदर्शी बन करके हर बात को देखो। अच्छा।

दादी जानकी जी की अनमोल शिक्षायें

"अगर अच्छा बनना है तो स्व को देखो और जिनके कनेक्शन में आओ उनकी अच्छाई को देखो" (05-01-07)

जब शान्त स्वरूप होकर सभी ओम् शान्ति बोलते हैं तो चेहरे में शान्ति, प्रेम, खुशी और शक्ति यह चारों इकट्ठी दिखाई पड़ती हैं। चारों का आपस में बड़ा गहरा सम्बन्ध है।

दिल में बहुत बातें होते हर बात स्पष्ट हो और उसमें सार भी भरा हुआ हो क्योंकि कोई भी बात स्पष्ट होने से कभी डाउट नहीं उठता, मूंझते नहीं हैं। निश्चय मजबूत है तो अडोल अचल स्थिति बनाना इज़ी है, यह भी मेरा भाग्य है। संशय डोलायमान करता है, हिलाने लग पड़ता है फिर जब हिलते हैं तो चलायमान होते हैं जिससे रेत के लड्डू बन जाते हैं। बार-बार चलायमान, डोलायमान होने वाले सेकण्ड में रेत के लड्डू के समान हो जायेंगे।

अगर किसी को जीभ रस बहुत है, लेकिन हज़म करने की ताकत ही है। जब हज़म नहीं कर सकता है तो ताकत कहाँ से आवे? सिर्फ बाबा की मुरली बहुत अच्छी, बहुत अच्छी कहते रहने से क्या होगा? क्योंकि अन्दर में डोलायमानी और चलायमानी का कुछ गड़बड़ घोटाला है इसलिए हज़म ही नहीं होता है। तो कई भाई-बहनों की शक्ल को देखते लगता है कि इन्हों ने शायद कुछ खाया पिया नहीं है। लगता ही नहीं है कि यह कोई ब्रह्माभोजन खाया हुआ है या ब्रह्मा बाबा के मुख से कुछ ज्ञान सुना है। परचिंतन की जो खामी है वो कभी ब्राह्मण भी बनने नहीं देगी। देवता तो सतयुग में बनेंगे उसके लिये फरिश्ता बनना है। जो सच्चा पक्का ब्राह्मण होगा वही फरिश्ता बनेगा।

जो सच्चा होगा वो पक्का बन सकता है। थोड़ा भी झूठा है तो उसके आगे मुश्किलातें बहुत आयेगी, उनके लिए मुस्कराना मुश्किल है। और जो सच्चा और पक्का होगा उसके लिए सबकुछ सहज होगा, वही यह गीत गायेगा कि तुमने हमको अपना बनाके मुस्कराना सिखा दिया...। तेरे मुस्कराहट से किसी की मुश्किलातें मिट जायें तो जो बाबा ने दिया है उसको यूज़ करो तो मुक्ति और जीवनमुक्ति का वर्सा मिलेगा। मुक्ति माना कोई भी बात से फ्री, कोई मुझे रोक नहीं सकता, बन्धनमुक्त है। जीवनमुक्त माना न्यारा और प्यारा है। जीवन में है पर सबसे न्यारा है। बन्धनमुक्त माना लगाव, झुकाव और दबाव से मुक्त। कलियुगी किसी भी प्रकार के कर्मबन्धनों से मुक्त। वह किसी के आगे झुकता नहीं। उसे नशा रहता है मेरे बाबा जैसा कोई नहीं।

कभी भी किसी प्रकार से शक्ल छोटी न हो जाये। कभी गुस्से में लाल हो जायेगी, कभी थोड़ा अपमान हुआ तो पीली हो जायेगी। सोचेगा यह काम तो कुछ भी नहीं करते नाम इनका ही आता है, मेरा कभी नाम ही नहीं आता है, यह सोचा तो लगा माया का गोला। अरे! नाम से काम नहीं। तुम काम ऐसा करो जो नाम भगवान के मुख पर आये। पर जब तक यहाँ वहाँ नाम-रूप की बीमारी है और जो नाम कमाने के लिए काम करता है वो भगवान के मुख की सन्तान नहीं है। भगवान के मुख की सन्तान वो है जिसके मुख पर उसका नाम है, उसका नाम फिर भगवान के मुख पर है।

ज्वालामुखी स्वरूप यानि ऐसी पॉवरफुल याद, योग और तपस्या हो। ऐसी स्थिति पावरफुल और शीतला स्वरूप के सन्तुलन वाली हो। इसके लिए धैर्यवत हैं तो शीतल हैं। बहुत अच्छा है, सब ठीक है... ऐसे करते, कहते आगे बढ़ते बढ़ाते रहो। कोई भी अच्छी फीलिंग वा खराब फीलिंग हो तो वो नज़रों से पता चल जाता है। जिसके पास बाबा के लिए सच्ची दिल है और बाबा हमको जो बनाना चाहता है उसके बिगर और कोई तमन्ना नहीं है, और कोई इच्छा नहीं है तो बाबा की नज़रों से निहाल हो जायेंगे। जो बाबा की नज़रों से निहाल होने का अनुभव करता है वो कभी बेहाल नहीं होता है। तो हमारी भी स्थिति ऐसी हो जो हमारे सामने आये वो नज़र से निहाल हो जाये। सबके दिल से शुक्रिया निकले। अच्छा।

दादी प्रकाशमणि जी के अमृत वचन
"अपनी ऊंच स्थिति बनाने के लिए अपने पास कुछ युक्तियां रखो"

हम सच्चे बाबा के बच्चे हैं, सच के अन्दर कभी आंच नहीं लाओ तो स्थिति बन जायेगी। आज्ञाकारी बनो। आज्ञाकारी अर्थात् हाँ जी, यही हमारा साइन है। जो यहाँ हाँ जी, हाँ जी करेंगे उनकी वहाँ हाँ जी, हाँ जी होगी। हाँ जी करने वाले कभी डगमग नहीं हो सकते। क्यों-क्यों में अपना माथा गर्म नहीं करो। दिमाग को शीतल कुण्ड बनाओ। हाँ जी का पाठ गर्मी निकाल देता। शीतल काया वाले योगी बन जाते।

मेरे दिल में सबके लिए रिस्पेक्ट हो। रिस्पेक्ट वही रख सकते जिनके अन्दर शुभ भावना है। अगर अनुमान और नफरत होगी तो प्यार भी गंवायेंगे, मान भी। यूनिटी भी गंवायेंगे। भल तुम्हें गिराने लिए कोई ने गड्ढा खोदा हो, लेकिन अगर तुम सच हो, तुम्हारे दिल में उसके प्रति शुभ भावना है तो बाबा तुम्हारी रक्षा करेगा। तुम्हें बचा लेगा। अन्दर में कभी भी अशुभ भाव न हो। ऐसे नहीं सोचो – देखना यह मेरे लिए ऐसा करता, धर्मराज बाबा इसे कितना दण्ड देंगे। मैं कोई श्राप देने वाली दुर्वासा नहीं। मैं क्यों कहूँ यह मुझे तंग करता – देखना इसकी क्या गति होगी। मैं क्यों बुरा सोचूं। अगर मैंने अशुभ सोचा तो मुझे उसका 100 गुणा दण्ड मिलेगा क्योंकि मैं दुर्वासा बनी। राजयोगी दुर्वासा नहीं बन सकते। आप अपनी ऐसी स्थिति रखो तो कभी इन्द्रियों की चंचलता आयेगी ही नहीं। तुम बाबा को मनाओ तो आपेही सब मान जायेंगे। कई हैं जो भावना रखते सर्विस की और करते हैं डिससर्विस। आपस में नहीं बनती तो लड़ पड़ते। कहेंगे मुझे मान नहीं मिलता उसे क्यों मिला।

हमें बाबा ने श्रीमत दी है बच्चे क्षीरखण्ड होकर रहो। स्वप्न में भी लूनपानी नहीं होना। मैं क्षीरखण्ड वाली लूनपानी क्यों होती। अगर लूनपानी होते तो ब्रह्माकुमार कुमारी कहला नहीं सकते। मेरा काम है दूध-चीनी होकर रहना। अगर मेरे में नमक होगा तो दूसरे भी मेरे ऊपर नमक डालेंगे। लूनपानी होने का मुख्य कारण है देह-अभिमान। अगर मैं इस दुश्मन से किनारा कर क्षीरखण्ड रहूँ तो कोई भी बात मेरे सामने आयेगी ही नहीं। हवा की तरह चली जायेगी। सदा क्षीरखण्ड रहो माना एकता में, युनिटी में रहो।

पढ़ाई छोड़ना माना लूला लंगड़ा बनना। मुरली में बाबा ने जो भी श्रीमत दी है उसे पालन करना मेरा स्वधर्म है। चेक करो मेरे में श्रीमत पालन करने की कितनी शक्ति है? मेरा सारा व्यवहार श्रीमत के अन्दर है। मुझे श्रीमत है - तुम देहधारी की आकर्षण में नहीं जाओ। अगर आकर्षण होती तो वह श्रीमत की लकीर छोड़ता। उन्हें रावण जरूर अपनी शोकवाटिका में ले जायेगा। हमें श्रीमत है तुम अपना तन-मन-धन, बाबा की सेवा में लगाओ। अपनी दिनचर्या को श्रीमत के अनुसार चेक करो।

ईर्ष्या के वश कभी भी किसी को गिराने का ख्याल नहीं करो। अगर स्वयं को चढ़ाने का संकल्प और दूसरे को गिराने का संकल्प है तो यह बहुत बड़ा पाप है।

भक्ति में कहते हैं हृदय में भगवान बैठा है। यह हृदय हमारे बाबा का घर है। जिनके हृदय में प्रेम है, उनके हृदय में बाबा की याद है। जिनके हृदय में बाबा है, उनके हृदय में बाबा के सब रत्न हैं। बाबा के सब फूल हैं। अगर कहते यह मेरा स्टूडेन्ट.... बाबा कहता मेरा कहना भी बहुत बड़ा पाप है। सब बाबा के स्टूडेन्ट हैं। बाबा के कहने पर चल रहे हैं फिर तुम क्यों कहती – यह मेरा स्टूडेन्ट तुम्हारे सेन्टर पर नहीं जा सकता। मैं तो कहती जो ऐसा सोचते वह बहुत बड़ा पाप करते हैं। चुम्बक हमारा बाबा है, चलाने वाला बाबा है। बाबा के सब प्यारे बच्चे हैं। बेहद की भावना रखो। हदों में नहीं आओ।